पाठ 4. मुतांदी

पाठ का उद्‌देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्‌देश्य बच्चों को मानवीयता के धरातल से जुड़े रहने की सीख देता है। इस पाठ द्‌वारा बच्चे समझ पाएँगे कि जो लोग हमारे घरों में काम करते हैं, वे भी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाते हैं। अत: हमें उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए तथा उनके साथ आत्मीयता रखनी चाहिए।

पाठ का सारांश

मुतांदी नाम का रसोइया राजा साहब के यहाँ बहुत मेहनत और लगन से काम करता था। राजा साहब का व्यवहार भी बड़ा नम्र था। राजा साहब के इकलौते बेटे शंकरन की देखभाल मुतांदी ही करता था। शंकरन इंग्लैंड से उच्च शिक्षा ग्रहण करके वापस आया तथा अधिकारी बन गया। राजा साहब के गुज़र जाने पर शंकरन की ज़िम्मेदारी मुतांदी पर आ गई थी। मुतांदी की कोई संतान नहीं थी। वह शंकरन को ही अपना बेटा मानता था। मुतांदी ने शंकरन की शादी राधा से करवाई। राधा मुतांदी को पसंद नहीं करती। वह मुतांदी को नीचा दिखाने की कोशिश में लगी रहती है। थक-हारकर शंकरन मुतांदी को अपने घर से निकल जाने के लिए कहता है। शंकरन के बेटे के जन्मोत्सव पर मुतांदी अपने गाँव से उनके पास मिलने आता है तथा उनके बेटे के लिए उपहार भी देता है। राधा यह सब देखकर द्रवीभूत हो जाती है। मुतांदी भी अपना अपमान भुलाकर उनके पास रुक जाता है। अपनों से दूर होने का दुख राधा समझ चुकी थी।

अध्यापन संकेत

पाठ आरंभ करने से पहले **पठन-पूर्व चर्चा** में पूछे प्रश्नों पर बच्चों से चर्चा करें। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पाठ के एक-एक अंश का वाचन करवाएँ। पाठ के महत्त्वपूर्ण अंशों का सरलीकरण कर बच्चों को समझाएँ। बच्चों को इस कहानी के लेखक तथा भारत के अंतिम वायसराय सी. राजगोपालाचारी के बारे में जानकारी दें। उनसे पाठ का मूल भाव पूछें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- यह कहानी आपको कैसी लगी? इससे आपको क्या सीख मिली?
- आप स्कूल के विभिन्न कर्मचारियों जैसे सफ़ाई कर्मचारी, बस चालक आदि तथा घर के काम-काज में सहायता करने के लिए रखे गए व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करते हो तथा उन्हें क्या कहकर संबोधित करते हो?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्‌यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।